E-ISSN 2582-5429
SJIF Impact - 5.675

AKSHARA

MULTIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

July-September 2023 Volume 04 Issue III

Chief Editor

Dr. Girish S. Koli

Scanned by PDF Scanner

AMRJ

E- ISSN 2582-5429

Akshara Multidisciplinary Research Journal

Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal

July-September 2023 Volume 04 Issue III

SJIF Impact- 5.67

Akshara Multidisciplinary Research Journal

Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

July-September 2023

Volume 04 Issue III

Scientific Journal of Impact Factor (SJIF) Impact-5.67

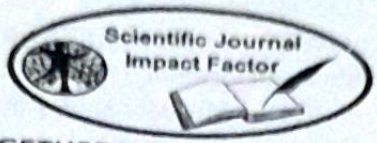

TOGETHER WE REACH THE GOAL

International Impact Factor Services

International Society for Research Activity (ISRA)
Journal-Impact-Factor (JIF)

Digital Online Identifier-
Database System

Akshara Publication

Plot No 143 Professors colony,
Near Biyani School, Jamner Road, Bhusawal Dist Jalgaon Maharashtra 425201

Scanned by PDF Scanner

AKSHARA

E-ISSN 2582-5429

AMRJ MULTIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

Office. Polt.No. 42 Gokuldham Residency Prerana nagar , Bhusawal Dist. Jalgaon (Maharastra) 425201

Certificate of Participation

This is to certify that the review board of Akshara Multidisciplinary Research Journal accepted the research paper / article by

Prof. Dr. / Mr . /Mrs. डी. श्रीदेवी

titled as गिरिजा भारती का 'अस्तित्व' उपन्यास में नारी के विविध रूप

It is Single Blind Peer Reviewed and published in the Volume 04 Issue III

month of July - Sept 2023 We express our thanks for sending research material to be published in our AMRJ.

5.67 IMPACT FACTOR

ISO 9001 CERTIFIED

Scientific Journal Impact Factor

TOGETHER WE REACH THE GOAL

ISSN 2582-5429

9 772582 542001

Editor in Chief
Dr. G. S Koli

Scanned by PDF Scanner

E- ISSN 2582-5429
AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal
July-September 2023 Volume 04 Issue III SJIF Impact- 5.67

Index

Sr. No	Title of the Paper	Author's Name	Pg.No
1	Gender Neutral Laws on Sexual Offences: Need of the Nation	Dr. Amitesh Anand	05
2	A Study of Regulatory Framework of Indian Banking Sector	Dr. Premila Jain Prerna Jain	12
3	Study Habits of higher Secondary School Students in Relation to Certain Variables	Kaushal Vyas Dr.Milan B. Shah	18
4	A Study of Gujarati Language Creativity of Secondary Schools Students in Context to Certain Variables	Hetal Pramodbhai Solanki	21
5	Peer-to-Peer Lending – A Booming Customer Centric Platform	Dr. M. Vijayalakshmi Mr. J. Muralidharan Dr. G Radhika	24
6	Reviewing the influence and use of mobile phone camera photography in today's life	Ajay Yadav Prof. (Dr.) B S Chauhan	29
7	Kolakaluri Enoch's "The Village Well": Quenching The Thirst With Unflinching Resolute	Dande Surekha Prof. Kolakaluri Sumakiran	33
8	Indian Parliamentary Democracy: Seven Decades of Success	Dr.D.S.V.S. Balasubrahmanyam	37
9	Evolution of General and States Elections With Respect to National and Regional Parties in India	Mr. Sharang R. Mundhe	42
10	A Comparative Study of Professional Attitude of B.Ed. Students Studying in Government-Aided and Self-Financed Institutions	Dr. Shikha Banswal	47
11	Mr. George Knightley: A clairvoyant in Jane Austen's Emma.	Mr. Vaibhav Sunil Bhalerao	52
12	The Contribution of Rabindranath Tagore in Indian Poetry	Mr.Vinod Samadhan Gade	54
13	Feminism and Human Welfare in Alice Walker's novel,'The Color Purple'	Dr. Deepak S. Chaudhari	58
14	'तमस' उपन्यास में प्रतिबिम्बित संवेदनात्मक मूल्य	अनीश कुमार यादव / डॉ. चंदन कुमार	60
15	Partition Horror Remembrance Day की याद में 'मेरी माँ कहाँ' ?	प्रो. डॉ.मनु	64
16	गिरिजा भारती का 'अस्तित्व' उपन्यास में नारी के विविध रूप	डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन / डी. श्रीदेवी	67
17	वर्तमान समय में समान नागरिक संहिता की प्रासंगिकता एक अध्ययन	डॉ.नीलम चैरे आकांक्षा गौतम	69
18	शैलेश मटियानी की कहानियों में लोकसंस्कृति का स्वरूप	डॉ.आशा हर्बोला / प्रियका बिष्ट	74
19	विनय मिश्र की ग़ज़लों में राजनीतिक चेतना	प्रो. रजनी शिखरे	77
20	समकालीन हिंदी कविता में पर्यावरण विमर्श	संतोष नागरे	79
21	सुषम बेदी के उपन्यासों में नारी जीवन	डॉ. संजय आर. पटेल	82
22	नारी का अस्तित्व मालती जोशी की दृष्टि में	डॉ. अनुराधा पाकलापाटि इ. जाक्कुलिन	86
23	भोजनगर की बसंतीदेवी- बालविधवा की करुण कहानी	करुणालक्ष्मी.के.एस.	90

Scanned by PDF Scanner

E- ISSN 2582-5429
AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal
July-September 2023 Volume 04 Issue III SJIF Impact- 5.67

16

गिरिजा भारती का 'अस्तित्व' उपन्यास में नारी के विविध रूप

डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन
शोध निदेशिका
वेल्स विश्व विद्यालय, चेन्नई

डी. श्रीदेवी
शोधार्थी
वेल्स विश्व विद्यालय, चेन्नई

भारतीय समाज में नारी का महत्वपूर्ण स्थान है। नारी अपनी जिंदगी उनकी इच्छा से तय नहीं हो पा रही हैं। उनकी इच्छा के बीच परंपरा, परिवार, समाज, संस्कृति, आर्थिक संकट आदि न जाने कितनी दीवारों खड़ी हो जाती हैं। हम नदी फूल आदि के लिए नारी के नाम रखते हैं। नारी के बिना इस दुनिया में कुछ भी संभव नहीं होगा।

नारी समाज का मुख्य हिस्सा है। नारी की कई रूप होती है जैसे, पत्नी, बहू, मां, बहन, दादी आदि। महाभारत काल से ही नारी का अधोपतन आरंभ हुआ।

"यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमंते तत्र देवता। यत्रास्तु न पूज्यंते सर्वस्तत्राफलाः किया"। अर्थात जहां नारी की पूजा होती है, वहां देवता निवास करते हैं। जहां नारी की पूजा नहीं होती, वहां किसी भी फल की प्राप्ति नहीं होती।"[1] नारी श्रद्धा, सात्विकता, करुणा, ममता आदि भावों से परिपूरित है। परिवार के प्रत्येक व्यक्ति की जरूरतों को जानती, पहचानती और समझती भी हैं।

कथासार :- 'अस्तित्व' उपन्यास की लेखिका गिरिजा भारती है। इस उपन्यास में एक तृतीय लिंग के संघर्ष जीवन और नारी संघर्ष के बारे में लिखी है। सुधा और वर्मा जी को चार साल के बाद एक तृतीय लिंग बच्ची पैदा होती हैं। उसका नाम प्रीत है। सुधा और वर्मा जी प्रीत के लिंग की बात को सबसे छुपाते हैं। सुधा अपनी बेटी प्रीत की अस्तिमा और अस्तित्व के लिए इस समाज से हर परिस्थितियों में लड़ती है। प्रीत पढ़ लिखकर नौकरी करने लगती है। सुधा एक मां के रूप में अपनी जिम्मेदारी पूरी करने के लिए प्रीत की शादी अमन नामक एक तृतीय लिंग पुरुष के साथ करती है। सुधा प्रीत के जीवन संपूर्ण होने के लिए उसे अनाथालय से बच्चा गोद लेने की सुझाव देती है। प्रीत और अमन बच्चे गोद लेते हैं। सुधा दादी होतीहै। इस आनंद परिस्थिति के साथ उपन्यास पूर्ण होता है।

प्यारी पत्नी के रूप में :- परिवार को निर्माण करने में पत्नी का स्थान मुखिया है! यह कहावत भी है कि 'बिना गृहणी, गृह भूत का डेरा' अर्थात नारी घर की शोभा है। पति और पत्नी के बीच गहरी संबंध और स्नेह होती है। परिवार में पत्नी कभी-कभी मानसिक पीड़ा, तनाव घुटन और अलगाव के कारण वह दुखी होती हैं।

एक आदर्श दंपति के बीच में कोई राज नहीं रखते हैं। 'अस्तित्व' उपन्यास में सुधा और वर्मा दंपति अपनी बेटी का राज़ को किसी से नहीं बताना चाहते हैं। सुधा इस विषय पर अडिग रहती हैं। इसलिए सुधा वर्मा जी से कहती हैं "नही जी आप जानते हैं मैं कैसे रुक सकती हूं। यहां पर रुकी तो मां के सामने मेरे बेटी का राज खुल जाएगा।"[2]

जिम्मेदारी माँ :- हमारे देश में माता को एक महत्वपूर्ण स्थान है। नारी के मातृ रूप को पूजन करते हैं। माता को वात्सल्य भावना सहज होती है। इस भावना में उसके प्रेम का संपूर्ण रूप प्रकट होताहै। डॉ धर्मपाल कहते हैं- "नारी का मातृत्व पुरुष से श्रेष्ठ है, सक्षम, समर्थ तथा कल्याणकारी है। मातृत्व के कारण नारी की तुलना पृथ्वी के से की जाती है जो बीज रूप पुरुष के संयोग से पुरुष को उत्पन्न करती हैं। माता के रूप में नारी को समुद्र के समान कहा जाता है, जो पुरुष रूपी सूर्य की ऊर्जा से उर्वरा होती हैं।"[3]

माता संतानोत्पत्ति और वंश रक्षक हैं। संतानों की कल्याण हीमां का जीवन उद्देश्य है। त्याग, पवित्रता, क्षमाशीलता आदि सकारात्मक गुणों का रूप मां है। जब माता बनने से स्त्री का सौंदर्य अधिक हो जाती है। इस उपन्यास में सुधा अपनी बेटी के लिए समाज से लड़ने के लिए भी तैयार होती है। सुधा कहती हैं "मैं अपनी बेटी के हक के लिए इस पूरे समाज से लड़ लूंगी पर मां मुझ पर दया कर किसी को मेरे बेटी का राज मत बताना।"[4]

सुधा अपनी बेटी प्रीत के सकारात्मक सोच और आत्मविश्वास को बढ़ाने के लिए प्रीत से कहती हैं "नही बेटी ऐसे कोई बात नहीं, तुम में कोई कमी नहीं है, लेकिन यह समाज बहुत बुरा है। एक छोटी सी कमी का कारण तुझे मुझ से अलग कर देगा। तेरे पिताजी और मैं कुछ नहीं कर पाएंगे। मुझ यही चिंता सताती रहती है।"[5]

एक मां की जिम्मेदारी है कि अपनी बेटी की कठिन परिस्थितियों में भाग लेना और उसे आत्मविश्वास दिलाना। इस दौरान सुधा अपनी बेटी से कहती हैं "बेटा तुम इतना समझ लो कि यह समाज जिस भी कमजोर समझता है उन्हीं पर शुरू कर देता है

Scanned by PDF Scanner

E- ISSN 2582-5429
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal
AMRJ
July-September 2023 Volume 04 Issue III
SJIF Impact- 5.67

अपना अत्याचार। इसीलिए मैं तुम से कहती हूं कि तुम खुद को इतना ऊंचा और ताकतवर बनाओ कि यह समाज तुम्हारा कुछ न बिगड़ सके। मेरे न होने के बाद सुधा ने कहा।"[6]

बहू के रूप में :- विवाह के बाद नारी एक नए परिवार में बहू के रूप में प्रवेश करती हैं। बहू अपना कर्तव्य पालन करने की कोशिश करती हैं। डॉ धर्मपाल बहू के रूप के बारे में कहते हैं- "जो बहू अपने मायके वालों की सीख पर चलती हैं ससुराल से सास ससुर, जेठ, देवर, ननंद आदि पर अपना रौब जमाना चाहती हैं और बात-बात में अपने पीहर की उत्कृष्टता तथा ससुराल की निकृष्टता दर्शाती हैं, वह कभी शांतिपूर्वक नहीं रह सकती।"[7]

परिवार में नारी भोजन से लेकर सभी विषयों पर ध्यान रखती हैं। पति का आदेश, बच्चों की इच्छा, बूढ़ों को आदर, अतिथियों का उपचार आदि अपनी कर्तव्य निभाती हैं। इस उपन्यास में सुधा आदर्श पत्नी और अच्छी बहू के नाम लेने के लिए प्रयत्न करती हैं। सुधा की सासुमा कहती है - "अरे बेटा, हमारे जमाने में तो लोग बिना देखे ही शादी तय कर दिए करते हैं। कैसे भी लड़की हो और कैसे भी लड़का बड़ों की इस बात को सम्मान करते हैं रिश्ता तय कर दिया जाता था।"[8]

सुधा अपनी सासू मां की बातें स्वीकार करती हैं और उनसे तर्क ना करना चाहती है। वह मन ही मन सोचती हैं- "सुधा मन ही मन रोती हैं और सोचती हैं मां जी मेरी तरह का दर्द किसी मां को न हो जो मेरी तरह कोई भी अपनी बेटी को घर में बैठाये, लेकिन अपने मन की बात कहा भी नहीं सकती। इसलिए चुप हो जाना अच्छा समझती और घर के कामों में लग जाती।"[9]

कठोर सास के रूप में :- प्राचीन काल से ही हिंदू समाज व्यवस्था का आधार है परिवार। सास, ननंद, देवर, भाभी, जेठानी आदि संयुक्त परिवार के अभिन्न अंग है। इस व्यवस्था में बूढ़ों और विधवा के लिए एक आश्वास न मिलता है। लेकिन आज कल इस आधुनिक युग में संयुक्त परिवार का नाम ही नहीं के बराबर हैं। नारी के मातृत्व का दूसरा रूप सास है। सदियों से परिवार में सास का विशेष स्थान है। पुत्र के विवाह के बाद वधू जब घर आती है, तब पुत्र की मां सांस की भूमिका निभाती हैं। वह अपनी नई वधू के साथ कठोर व्यवहार करती हैं। जब सुधा की बहू रंजना अपनी ननंद प्रीत की संपत्ति के बारे में पूछती हैं, तब सुधा कहते हैं "कोई जरूरत नहीं है। तुम्हें दीदी के बारे में सोचने की। वह खुद सोच सकते हैं अपने बारे में, पढ़ी लिखी है, नौकरी करती है खुद अक्ल है उसको। उसे क्या करना है, क्या नहीं करना है?"[10]

संतुष्ट दादी के रूप में :- सुधा, प्रीत की बच्ची का नामकरण में भाग लेती हैं। प्रीता और अमन बहुत खुशी से मेहमानों को स्वागत करते हैं। सुधा अपनी बेटी प्रीत की जीवन संपूर्ण होने के संतुष्ट हो जाती हैं सुधा सोचती है कि उसकी सारी जिम्मेदारियां पूरी हो गई। इस संदर्भ में सुधा गंभीर से अपने पति वर्मा जी से कहती है -"अगर किसी इंसान का कोई अंग नहीं रहता है सी दुर्घटना में शरीर से अलग हो जाता है तो क्या समाज उसे सही नहीं अपनाता है और फिर अगर कोई इंसान यदि किन्नर है। उसको भेदवाद क्यों क्या उसका इस समाज का अधिकार नहीं उसे सबकी तरह समाज में जीने का अधिकार नहीं क्यों होता समाज पर उसका भी उतना ही अधिकार है जितना सामान्य व्यक्ति का।"[11]

निष्कर्ष :- नारी को देवी मानते हैं। लेकिन उन्हें इंसान मानने से इंकार कर देते हैं। नारी विविध रूप में किसी न किसी समस्या के कारण परेशान होती हैं। नारी विविध रूप का निर्वाह करते समय कभी-कभी दारुण व्यथा और दशा से गुजरना पड़ता है। लेकिन अपनी स्वतंत्रत अस्तित्व को बनाए रखने के लिए उसने स्वयं शक्ति आई हुई दिखाई देती है। नारी सदैव मौलिक संस्कार, त्याग और सहनशीलता की प्रतिमा है।

संदर्भ ग्रंथ

1. श्याम चंद्रकपूर, हिंदी निबंध सौरभ, ओशियन बुक्स प्रा. लि., नई दिल्ली, प्र.स.2002, पृ. सं.93
2. गिरिजा भारती, अस्तित्व, विकास प्रकाशन, कानपुर, द्वि सं.2021, पृ. सं.22
3. डॉ उषा सपकाले, हिन्दी उपन्यासों में नारी, विद्या प्रकाशन, कानपुर, 2014, पृ. सं.113
4. गिरिजा भारती, अस्तित्व, विकास प्रकाशन, कानपुर, द्वि सं.2021, पृ. सं.28
5. गिरिजा भारती, अस्तित्व, विकास प्रकाशन, कानपुर, द्वि सं.2021, पृ. सं.37
6. गिरिजा भारती, अस्तित्व, विकास प्रकाशन, कानपुर, द्वि सं.2021, पृ. सं.63
7. डॉ उषा सपकाले, हिन्दी उपन्यासों में नारी, विद्या प्रकाशन, कानपुर, 2014, पृ. सं.131
8. गिरिजा भारती, अस्तित्व, विकास प्रकाशन, कानपुर, द्वि सं.2021, पृ. सं.46
9. गिरिजा भारती, अस्तित्व, विकास प्रकाशन, कानपुर, द्वि सं.2021, पृ. सं.48
10. गिरिजा भारती, अस्तित्व, विकास प्रकाशन, कानपुर, द्वि सं.2021,पृ. सं.90
11. गिरिजा भारती, अस्तित्व, विकास प्रकाशन, कानपुर, द्वि सं.2021, पृ. सं.95

Scanned by PDF Scanner